ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
April-June, 2024 : 1(3)32-43
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी
सहायक आचार्य, जनार्दन राय नागर
राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

Corresponding Author :
डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी
सहायक आचार्य, जनार्दन राय नागर
राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

वित्त सम्बन्धी लघुकथाओं का एक शोध अध्ययन

सारांश:

साहित्य को समय का दर्पण माना गया है। समाज का ऐसा कोई पहलू नहीं होता जो साहित्य से इतर हो। महत्वपूर्ण पहलूओं को साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान मिलता ही है। पद्य साहित्य में भावनाओं के सौन्दर्य का वर्णन बेहतर होता है तो गद्य में सत्य के दर्शन का। एक उदाहरण से इसे समझें तो एक भूखा आदमी किसी अमरुद को देख रहा है, इसका वर्णन जितना अच्छा कविता में हो सकता है, कथा में नहीं। हाँ! कथा में इस विषय को लेकर यह बंधन भी नहीं कि लिया ही नहीं जा सकता। कथा में अमरुद न खा पाने के पीछे के कारण को बेहतर तरीके से बताया जा सकता है, हो सकता है वह किसी शोषण का शिकार हो, कर्मशील न हो आदि। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला कहते हैं कि – गद्य जीवन संग्राम की भाषा है। वस्तुतः गद्य हमारे जीवन के इतना निकट और अविभाज्य हिस्सा है कि हर व्यक्ति के जीवन की एकाधिक घटनाएं किसी कथा से जुड़ी होती हैं या कथा बन सकती हैं। इसी प्रकार का एक विषय है जो सभी से जुड़ा है, वह विषय है धन। धन की कमी के कारणों को और धन होने पर उसके उपयोग व दुरुपयोग करने, प्रभावों, अर्थव्यवस्था, धनार्जन आदि मुद्दों को साहित्य में सामजिक दृष्टि के साथ-साथ यदि वाणिज्यिक दृष्टि भी मिले तो यह समाजोत्थान के लिए महत्वपूर्ण आधार हो सकता है। देश-समाज में धन की कमी के कारणों को तलाशना और इन सहित धन सम्बन्धी अन्य अच्छे-बुरे विषयों को सभी के समक्ष रखना लघुकथा का भी दायित्व बनता है। फिलवक्त सामाजिक लघुकथाओं की भीड़ में वाणिज्यिक लघुकथाओं को स्थान मिलना कुछ मुश्किल तो है लेकिन लघुकथाकारों ने इस पर कुछ भी कार्य न किया हो, यह असंभव है। इस पत्र में वित्त व उससे सम्बन्धित विषयों को केंद्र में रखकर लघुकथा सृजन पर चर्चा की गई है तथा उनमें से कुछ महत्वपूर्ण लघुकथाओं पर आंशिक प्रकाश डालकर उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन व सृजन पर दृष्टि डाली गई है।

बीजवाक्य: लघुकथा, वित्त सम्बन्धी लघुकथाएं, सृजन, सामयिक सृजन, धन

परिचय

कुछ सालों पहले अपने इक मित्र, जो कि एक आईटी कम्पनी में अच्छे पद पर है, से काफी समय बाद मुलाक़ात हुई। उनके इस प्रश्न पर, कि आजकल क्या कर रहे हो?, मैंने उत्तर दिया "पीएचडी की थीसिस जमा करवा रखी है और आगे प्रक्रिया का इंतज़ार कर रहा हूँ।" पीएचडी चूँकि बड़ी मेहनत का काम होता है तो कहते-कहते मेरा चेहरा भी चमक उठा था, लेकिन वह चमक अगले ही क्षण खत्म हो गई, जब उसने यह प्रश्न किया कि, "इस से मोनेटरी (वित्तीय) लाभ कितना होगा?"

आगे के वार्तालाप की यहाँ आवश्यकता नहीं है क्योंकि मेरे मन में यह विचार उठाने को यह प्रश्न काफी था कि अब दुनिया में हर कार्य के पीछे यह आधार अवश्यम्भावी हो गया है कि उस कार्य से कितना धन अर्जित होगा?

उपरोक्त विचार ही इस शोधकार्य का भी आधार बना कि जब अधिकतर व्यक्ति अपने हर कार्य का सह-सम्बन्ध धन से जोड़ रहे हैं तो लघुकथाकार समाज के इस दृष्टिकोण को दर्शा पाने में कितने सफल हुए हैं? अनसुलझे प्रश्नों के बिना शोध नहीं होती तथा यह एक प्रश्न ही शोध हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न है।

पुस्तकों, वेबसाइट्स, सोशल मीडिया पर अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि सामजिक विसंगतियों पर तो लघुकथाएं काफी लिखी जा रही हैं लेकिन धन सम्बन्धी विचारों और विसंगतियों को लघुकथाओं में आवश्यक स्थान प्राप्त होना अभी बाकी है। कुल मिलाकर यह एक अच्छी स्थिति नहीं है। तब लघुकथाकारों से इस विषय से सम्बन्धित रचनाओं का आग्रह किया। इसके संख्यात्मक परिणाम तो सकारात्मक आए, लेकिन इस शोध कार्य के मद्देनजर गुणात्मक दृष्टि से रचनाएं कम ही प्राप्त हुई।

क्या सच में धन ही सारी बुराईयों की जड़ है? यों तो साहित्य में कई लेखकों ने इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास किया है, लेकिन अधिकतर ने लालच, शक्ति और भ्रष्टाचार जैसे अन्य नकारात्मक विषयों से इसे जोड़ा है। भारतीय संस्कृति में धन को देवी-देवताओं से जोड़ा गया है और केवल भारतीय ही नहीं बल्कि अन्य संस्कृतियों में भी धन को पूरा सम्मान दिया गया है। अफ्फिर्मेशंस, जो कि शक्तिशाली सकारात्मक वाक्य होते हैं और जिन्हें बार-बार दुहरा कर किसी लक्ष्य को पाया जा सकता है, में भी स्वास्थ्य और धन को बहुत अधिक महत्व दिया गया है।

कालजयी लेखन ऐसा होता है जो न सिर्फ काल की वर्तमानता को दर्शाता है बल्कि आने वाली शताब्दी तक की चुनौतियों पर खरा भी उतरता है। सही साहित्य का गुण है कि आदमीयत की गायब होती परिपूर्णता को शब्दों से उभार सके तथा सच व झूठ के टुकड़ों में बंटे हुए मनुष्य को आत्मिक चेतना तक का अनुभव करवा सके। अष्टछाप के प्रसिद्ध कवि कुम्भनदास को एक बार अकबर ने फतेहपुर सीकरी आमंत्रित किया था, कुम्भनदास ने उस आमंत्रण को अस्वीकार करते हुए कहा कि "सन्तन को कहा सीकरी सों काम।" सच्चे साहित्यकार संत की तरह होते हैं। ज़्यादातर इतिहासकारों ने शासकों की अयोग्यता को भी जय-जयकार में बदला है लेकिन अधिकतर साहित्यकारों ने नहीं। आज का समय धन प्रधान है ही, अतः साहित्य में धन की लालसा, धन के लेनदेन के तरीके, धन के उपयोग-दुरुपयोग, धन के लाभ और धन से जुडी हुई विसंगतियों व महत्व को दर्शाना अवश्यम्भावी है। लघुकथा चूँकि अब ऐसी विधा हो रही है, जिसके सामान्य पाठकों की संख्या में वृद्धि हो रही है, अतः लघुकथा का दायित्व है ही कि सर्व-सुलभ भाषा में सर्व-वर्ग के लिए सर्व-समाज की बातों को इस तरह से सामने लाए, जो दैनिक जीवन-यापन से लेकर बड़े-से-बड़े मानवीय हितों के सन्देश देने में समर्थ हो। इस पत्र में धन व उससे सम्बन्धित वस्तुओं और विचारों से ओतप्रोत लघुकथाओं का एक अध्ययन किया गया है।

शोध का विस्तार व सीमाएं

धन का विस्तार केवल मुद्रा तक ही नहीं होता, वरन धन से क्रय व धन के लिए विक्रय सरीखी प्रक्रियाएं, सम्पति, संपदा, अर्थव्यवस्था, कमोडिटी, शेयर्स, मुद्रास्फीति, इन्वेंटरी, इन्वोइसिंग, कारखाने, फाइनेंस कंपनी, बैंक, डाकखाना, ब्याज, क्रेडिट कार्ड, लोन, आदि से भी होता है। आवश्यक नहीं कि किसी रचना में धन, रुपए या उससे मिलते-जुलते शब्द हो हीं। बिना इनके भी अर्थ सम्बंधित

लघुकथा कही जा सकती है और इसका विपरीत भी सत्य ही है कि लघुकथा में जहां-तहां रूपये जैसे शब्द का प्रयोग होने के बाद भी उसका मूल तत्व अर्थ सम्बंधित न हो। इस शोध कार्य में सबसे बड़ी बाधा यही रही कि कई लघुकथाकारों के लिए धन, रुपये, मुद्रा जैसे शब्दों का प्रयोग कर लेना ही धन सम्बन्धी लघुकथा बन जाना था।

भारतीय वैदिक संस्कृति में धन

ऋग्वेद के प्रथम सूक्त के तीसरे श्लोक में ही धन को उत्तम साधन बताया गया है।

अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे. यशसं वीरवत्तमम्..

अर्थात अग्नि की कृपा से धन प्राप्ति होती है। उसी कृपा से वह धन दिनोंदिन बढ़ता जाता है और धन से व्यक्ति यश प्राप्त करता है एवं अनेक वीर पुरुषों को अपने यहां रखता है।

उपरोक्त श्लोक यह सिद्ध कर ही रहा है कि प्रारम्भ से ही धन यश और समृद्धि का बड़ा कारण रहा है। जहां आज साहित्यकार धन को लालच आदि बुराइयों से जोड़ रहे हैं, वहीं वैदिक साहित्य की सबसे पहली पुस्तक का तीसरा श्लोक ही धन को कृपा बता रहा है। इसी प्रकार ऋग्वेद के सूक्त 10 के छठे श्लोक में भी कहा गया है कि बलशाली इंद्र हमें धन प्रदान कर हमारी रक्षा करते हैं। सामवेद के भी पहले अध्याय के पहले खंड का तीसरा श्लोक धन का महत्व बता रहा है:

अग्निदूत वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्.... अर्थात हे अग्नि! आप सब कुछ जानने वाले हैं। आप धन के स्वामी हैं।

मानव जीवन की पूर्णता के लिए वैदिक शिक्षा या विद्या में मानव जीवन के अनिवार्य चार पुरुषार्थ मानव मूल्यों पर ही आधारित है। इनमें दूसरा पुरुषार्थ 'अर्थ' है। इसके अतिरिक्त पुरुष + अर्थ ही पुरुषार्थ हुआ।

समुद्र मंथन में मणि व लक्ष्मी की प्राप्ति और इस पर आधारित लक्ष्मी-मंत्र 'श्रीं' पर आधारित श्रीमती (श्रीम-अति) शब्द, कुबेर स्तुति जैसी बातें भी यह दर्शाती हैं कि भारतीय संस्कृति में धन को हमेशा से ही अच्छे भावों से देखा जाता रहा।

वैदिक साहित्य केवल तात्कालिक समस्याओं की पूर्ति करने वाली प्रक्रिया नहीं रहा,बल्कि यह एक वृहद चिंतन था। आदर्शवादिता, प्राकृतिक वातावरण, व्यापकता, "सर्वभूत हिते रता:" जैसे मंत्र (जिन पर सामयिक साहित्य का सर्जन होना चाहिए), प्रासंगिकता, मूल्य परक, अनुशासन, दर्शन आदि गुणों से युक्त था। इनमें कर्मशील रह अर्थ उपार्जन को भी मुख्य स्थान दिया गया। एनसीएफटीई 09, एनसीएफ 05 व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्य व अवधारणाएं वैदिक साहित्य व शिक्षा के उद्देश्यों व अवधारणाओं से मिलते-जुलते हैं।

भारत के अन्य मुख्य धर्मों में आर्थिक स्थिति बेहतर बनाने की बातें

भारत के अन्य प्रमुख धर्मों में भी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने की बातें कही गई हैं। इस्लाम में 'सूरह वाकिया' जिसे 'धन का सूरह' भी कहा जाता है, रोज़ पढने की सलाह दी गई है और यह माना गया है कि इसे रोज़ पढने से आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है।

बाइबिल में भी लगभाग 800 बार धन का जिक्र आया है। एंजेल सेशिएल धन के एंजेल माने गए हैं। इसी प्रकार कई प्रार्थनाएं भी ऐसी हैं जो धन-समृद्धि में वृद्धि करती हैं।

जैन धर्म में महावीर स्वामी का अर्थशास्त्र भौतिकवाद और अध्यात्मवाद दोनों ही को स्वीकार करता है। इसी प्रकार बौद्ध धर्म में भी वसुधरा नामक देवी सुख, धन, समृद्धि व वैभव की देवी हैं।

अतः यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि सभी धर्मों में कम से कम इतना धन और सम्पति तो अर्जित करने के लिए कहा गया है जिससे जीवनयापन ढंग से हो सके। सभी धर्म अति संग्रह के लिए भी मना करते हैं और गरीबों की मदद के भी पक्षधर हैं। कुल मिलाकर धन के उचित उपयोग को बढ़ावा दिया गया है।

धन सम्बन्धी साहित्य

साहित्य में भी धन को उचित महत्व दिया गया है। प्रथम महाकाव्य वाल्मीकि रामायण का एक श्लोक है, "धर्म-धर्मादर्थः प्रभवति धर्मात्प्रभवते सुखम्। धर्मण लभते सर्वं धर्मप्रसारमिदं जगत् ॥" इसका अर्थ है धर्म से ही धन, सुख तथा सब कुछ प्राप्त होता है। इस संसार में धर्म ही सार वस्तु है। यहाँ धन और सुख की प्राप्ति हेतु धर्म को अपनाने की बात कही गई है। इसी प्रकार महाभारत तो पूरी तरह धन-संपदा पर ही आधारित है। [1]

कालिदास ने अपनी रचनाओं में विभिन्न राजाओं के वैभव का भी वर्णन किया है। उनकी कृतियों से यह विदित होता है कि वे ऐसे युग में रहे जिसमें वैभव और सुख-सुविधाएं थीं। उनके अनुसार राजाओं ने राजस्व की वसूली जन-कल्याण के लिए की, 'प्रजानाम् एवं भूत्यार्थम्' जैसे सूर्य जल लेता है और उसे सहस्रगुणा करके लौटा देता है।

रामचरित मानस के बालकाण्ड में नारद जी का अभिमान नष्ट करने के लिए हरिमाया ने एक नगर रचा। जिसके बारे में लिखा गया है कि उस नगर में शीलनिधि नाम का राजा था, जिसके यहाँ असंख्य घोड़े, हाथी और सेना के समूह (टुकड़ियाँ) थे। उसका वैभव और विलास सौ इंद्रों के समान था। यही बात महाराजा दशरथ के लिए भी कही गई है कि "अति लघु लाग तिन्हहि सुरराजू।" (उनके वैभव के समक्ष) इंद्र का राज भी काफी छोटा लगता था। [2]

तुलसीदास जी ने यह भी कहा है कि, "गो-धन, गज-धन, वाजि-धन और रतन-धन खान। जब आवत संतोष-धन, सब धन धूरि समान" यहाँ उन्होंने गाय, हाथी-घोड़े और रत्नों के संग्रह की बजाय संतोष से जीवन जीने को कहा है। यह बात हालांकि वाणिज्यिक नहीं है, लेकिन संग्रह प्रवृत्ति को कम कर आवश्यक धन को अपने पास रखने के लिए ज़रूर कह रही है।

चाणक्य की प्रसिद्ध पुस्तक अर्थशास्त्र में विश्व के गुणों दक्षताओं तथा आर्थिक समृद्धि के उपायों का समकालीन परिप्रेक्ष्य में उत्तम वर्णन किया गया है। वैदिक युग में अपरा (लौकिक) विद्या का भी ज्ञान दिया जाता था, जिसमें अर्थशास्त्र भी पढ़ाया जाता था।

जीके चेस्टरटन की "द ऑनर ऑफ इज़राइल गो" (1910) के अनुसार भी लालची हुए बिना धन की लालसा की जा सकती है। [4]

ब्रिटेन की कवि जोनाथन स्विफ्ट ने "द साउथ सी प्रोजेक्ट" (1721) में साउथ सी कंपनी के शेयरों में बुल मार्केट के फटने के बाद निवेशकों के दर्द को बयान किया है। [3]

फ्योदोर दोस्तोयेव्स्की ने अपने उपन्यास 'द गैम्बलर' (1867) में जुआरी के जुनून को बताया है। इस्मने उन्होंने वित्तीय लाभ और हानि के भावनात्मक रोलर-कोस्टर का बहुत अच्छा वर्णन किया है। इसके अलावा दोस्तोयेव्स्की ने अभिजात वर्ग के इस पाखंड को भी चुनौती दी है, जो कहते हैं कि उन्हें धन की परवाह नहीं है, लेकिन वे लाभ पाने के लिए कैसीनो में भटकते रहते हैं। [5]

मार्क ट्वेन और चार्ल्स डडली वार्नर ने 'द गिल्डेड एज' (1873) में फेक स्टॉक प्रमोटरों द्वारा भोले-भाले निवेशकों को मूर्ख बनाने की बातों को बताया गया है। लियो टॉल्स्टॉय की 'हाउ मच लैंड डज़ ए मेन नीड?' (1886) को जेम्स जॉयस ने अब तक लिखी गई सबसे बड़ी लघु कहानी माना है। इस काल्पनिक कहानी में टॉल्स्टॉय एक ऐसे व्यक्ति को बताते हैं जिसका लालच समय के साथ खत्म हो जाता है कि सूरज डूबने से पहले वह खुद को कितना अमीर बना सकता है? [6]

शेक्सपीयर के अनुसार "जब मैं एक भिखारी हूँ तो मैं कहूंगा कि अमीर होने के अलावा कोई पाप नहीं है; और यदि मैं अमीर हूँ तो, मेरा विचार यह होगा कि भिखारी होने से बड़ी कोई बुराई नहीं है।" [7]

प्रेमचंद की कहानी 'कफन' में बुधिया के प्रसव पीड़ा से मृत्यु हो जाने पर दो गरीब-आलसी व्यक्तियों घीसू व माधव के पास उसके अंतिम संस्कार के लिए रुपये नहीं होते। जमींदार और अन्य संपन्न व्यक्तियों द्वारा सहायता करने पर वे कफन खरीदने जाते तो हैं, लेकिन उसकी शराब पी लेते हैं। आलस्य और प्रमाद से धन के विनाश का यह एक उदाहरण है।

इसके विपरीत प्रेमचंद की 'ईदगाह' में ही जब हामिद मेले से चिमटा खरीद कर आता है, तब अमीना छाती पीट लेती है कि लोहे का चिमटा क्यों ले आया? और हामिद के अपराधी भाव से यह कहने पर कि - तुम्हारी अंगुलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया, अमीना का गुस्सा स्नेह में बदल जाता है। यहाँ खरीदने की बात तो है लेकिन यह बात धन प्रधान नहीं है बल्कि माता-पुत्र के स्नेह को प्रधानता से दर्शा रही है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र के प्रसिद्द नाटक 'अंधेर नगरी' से तो सभी परिचित हैं ही, उसका यह वाक्य 'अंधेर नगरी चौपट राजा – टके सेर भाजी टके सेर खाजा' भी काफी प्रचलित हुआ। 'टके सेर' भी अर्थव्यवस्था से जुड़े हुए शब्द हैं। इसमें भी जब महंत कहता है कि ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, तो यह बात भी अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ी शासकीय व्यवस्था की उस विवेकहीनता को दर्शाती है कि राजा सभी को एक ही तराजू में तौलता है। 'काले धन' पर हरिओम पंवार की एक कविता है, जिसमें उन्होंने काले धन के तथ्य बताए हैं, इसमें उन्होंने संसद की चुप्पी, सेंसैक्स पर नज़रें, मनरेगा, बॉलीवुड, खनन माफिया से लेकर स्विस बैंक तक की बात कही है। [8]

इनके अतिरिक्त समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में रिपोर्ताज व लेख तो आर्थिक स्थितियों के सत्य वर्णन से भरे पड़े हैं। इन्हें भी हम महत्वपूर्ण साहित्यिक संपदा मान सकते हैं।

शोध की आवश्यकता

डा. अशोक भाटिया ने अपने एक लेख 'लघुकथा: लघुता में प्रभुता' [24] में कहा है कि, "लघुकथा अपने समय के यथार्थ को लेकर चलती है।" यह विचार केवल डा. भाटिया का ही नहीं है बल्कि प्रत्येक व्यक्ति जो लघुकथा से जुड़ा है, किसी न किसी रूप में इसे स्वीकारता है। साथ ही आज के समय के यथार्थ को ज़रा सा विचारें तो यह धन के बिना अधूरा है ही। जीवन यापन की हर चीज़ धन से जुडी है, सफलता का पैमाना भी धनार्जन से जुड़ा है। अतः डा. अशोक भाटिया की कही बात और धन, अर्थव्यवस्था आदि वित्त सम्बन्धी बातों को एक साथ रखें तो लघुकथाओं में वित्त सम्बंधित विषयों का होना आवश्यक हो जाता है।

तब यह ज्ञात करना भी आवश्यक हो ही जाता है कि लघुकथाकार वास्तव में वित्त सम्बन्धी लघुकथाओं का लेखन कितना कर रहे हैं और यदि यह अधिक नहीं है तो उसका कारण क्या है? बहरहाल उपरोक्त पंक्ति दो शोध की ओर इंगित कर रही है। एक यह कि वित्त सम्बन्धी लघुकथाओं कि मात्रात्मक और गुणात्मक स्थिति क्या है तथा दूसरा यह कि यदि यह स्थिति ठीक नहीं है तो वह किस कारण से है?

प्रस्तुत शोध हेतु लघुकथाओं का महत्व

उत्तर वैदिक काल में आचार्य विष्णु शर्मा ने राजकुमारों को नीति की शिक्षा देने के लिए छोटी-छोटी कहानियों का सर्जन किया। यह लघु-कथाएँ पंचतंत्र और हितोपदेश के नाम से संग्रहित है। कथा सुनाने के बाद गुरु द्वारा विभिन्न प्रश्न किए जाते थे, उनमें एक प्रमुख प्रश्न यह पूछा जाता था कि इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है। इसी प्रकार वैदिक काल में नियम-मंत्र आदि कंठस्थ कराने व उसे स्पष्ट करने के लिए गुरु प्रासंगिक, सामयिक, रुचिकर और बोधगम्य उदाहरण उपमा, रूपक और दृष्टांतों के रूप में बताते थे। वस्तुतः कहानी कहन, श्रवण व पठन कौतुहल जगाते हुए हमारे जीवन को प्रतिबिंबित करता है। इसके अतिरिक्त जब किसी भी सशक्त साहित्य के जरिए जिन विषयों को समाज के समक्ष लाया जाता है, वे विषय समाज में बदलाव का कारण बन सकते हैं। उचित तरह से अर्थवृद्धि की मानसिकता जो सकारात्मक भाव ला सकती है, यदि वह समाज में फ़ैल जाए तो देश का उचित आर्थिक व उससे सम्बन्धित विकास अवश्यम्भावी है। अतः साहित्य का दायित्व इस कार्य हेतु है ही और लघुकथाएं भी इससे अछूती नहीं हैं। लघुकथाओं का दायित्व भी सामयिक व प्रासंगिक मुद्दों को रुचिकर और बोधगम्य तरीके से दर्शाते हुए विकास का दिशा निर्माण भी है ही।

शोध हेतु लघुकथाओं का संग्रहण

शोध हेतु लघुकथाएं विभिन्न संग्रहों, संकलनों, पत्र-पत्रिकाओं, वेबसाइट्स तथा सीधे लघुकथाकारों से भी प्राप्त हुई हैं।

वित्त आधारित लघुकथाओं का अध्ययन

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि वरिष्ठ व कुछ समकालीन लघुकथाकार वित्त सम्बन्धी मुद्दों पर संवेदनाशीलता से कार्य कर रहे हैं। हालांकि कई लघुकथाएं ऐसी भी हैं जिन्हें लघुकथाकारों द्वारा वित्त सम्बन्धी समझा जा रहा है लेकिन वे सामजिक प्रकृति की हैं। जिन वित्त सम्बंधित लघुकथाओं का इस कार्य में अध्ययन किया गया, उनमें से कई लघुकथाएं बेहतरीन भी हैं। उदाहरणस्वरुप विक्रम सोनी की चर्चित लघुकथा 'अंतहीन सिलसिला' है, इसमें दस साल के बच्चे के पैर में, उसके पिता की मृत्यु होने पर, पिता के जूते पहनाए जाते हैं तथा वह एक बार और रो उठता है, उसे पता है कि अगले दिन से उसे अपने पिता की जगह मजदूरी-हलवाही में खटना है और उसकी पीढ़ियों को भी। इस लघुकथा में कहीं भी मजदूरी-हलवाही का कारण नहीं बताया गया है, लेकिन पाठकों का दिमाग किसी पुराने क़र्ज़ की तरफ खुद-ब-खुद चला जाता ही है। अतः यह कहा जाए कि यह लघुकथा आर्थिक विसंगति को उठा रही है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित चित्रा मुद्गल की लघुकथा 'बाज़ार' [19] में बिना कहीं भी रुपये का जिक्र किए हुए बहुत खूबसूरती से धनवादी मानसिकता का चित्रण किया गया है। एक परिवार ने एक नर्सिंग होम खोला। परिवार के सदस्य मिलकर पहले तो यह चर्चा करते हैं कि उद्घाटन हेतु किसे बुलाया जाए। कोई मदर टेरेसा के लिए कहता है, कोई स्वास्थ्य मंत्री के लिए, तो कोई फिल्मस्टार के लिए। इसी प्रकार नर्सिंग होम के नाम पर भी चर्चा होती है। कुल मिलाकर उन सभी के दिमाग में यह होता है कि नर्सिंग होम का अधिक से अधिक प्रचार कर उसे अच्छे से अच्छा चलाया जाए अर्थात धन कमाया जाए। यह मानसिकता आज के चिकित्सकों से विलग होती सेवा भावना और उनसे जुड़ती हुई ज्यादा-से-ज़्यादा धन कमाने की प्रवृत्ति को बेहतर तरीके से उजागर कर रही है।

सआदत हसन मंटो की लघुकथा 'ख़बरदार' [11] को पढ़िए,

//बलवाई मालिक मकान को बड़ी मुश्किलों से घसीटकर बाहर लाए।

कपड़े झाड़कर वह उठ खड़ा हुआ और बलवाइयों से कहने लगा :

''तुम मुझे मार डालो, लेकिन ख़बरदार, जो मेरे रुपए-पैसे को हाथ लगाया...!''//

तीन पंक्तियों की इस लघुकथा में मालिक मकान की धन के प्रति प्रेम को कहने का सामर्थ्य मंटो में ही हो सकता था।

सुकेश साहनी की लघुकथा 'अथ विकास कथा' [9] कार्यालय में बिलों में हेर-फेर पर आधारित है। यह एक ऐसी विसंगति है जो लगभग हर कार्यालय में मिल जाएगी। हालांकि हर बार यह किसी व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण ही हो यह तो नहीं होता, लेकिन व्यक्तिगत या कार्यालयिगत दोनों ही कारणों से बिलों में बदलाव, राशि में वृद्धि आदि किए जाते ही हैं। इस लघुकथा में क्षेत्र के विकास के लिए प्राप्त धनराशी को अपने व्यक्तिगत कामों में खर्च करने की मानसिकता को दर्शाया गया है। इसमें छोटे से लेकर बड़े तक सभी शामिल हैं। लघुकथा के अंत में बिलों में हेरफेर करने वालों की मानसिक प्रसन्नता को भी काफी अच्छे तरीके से बताया गया है,

//"शतप्रतिशत!" छोटे साहब ने चहकते हुए बताया।

"एक्सीलेंट जॉब!" बड़े साहब ने शाबाशी दी।//

यहाँ चहकना और शाबाशी देना बहुत कुछ कहने में सक्षम है।

कीर्तिशेष लघुकथाकार मधुदीप की लघुकथा 'हथौड़ा' में किसानों पर चढ़े बैंक का कर्ज़ न चुका पाने पर उसके मकान की नीलामी की बात की गई है और उसी समय एक अन्य व्यक्ति, जो नौ हज़ार करोड़ का बैंक डिफॉल्टर था, विदेश में आनंद ले रहा था।

[14] यह लघुकथा सीधे-सीधे अर्थव्यवस्था में फैली उस सामयिक विसंगति को सामने लाती है, जिसमें अमीरों के बड़े घोटालों की बजाय ज़रूरतमंदों पर दबाव डाला जाता है और बैंक स्वयं को तंत्र के अधीन भी कहता है।

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की लघुकथा 'वक़्त की कीमत' [18] एक व्यक्ति द्वारा दिहाड़ी मजदूर के हिसाब में से धन को घंटों के आधार पर काटने और उसी व्यक्ति द्वारा अपने दफ्तर में देर से पहुँचने को बताया गया है। इसी संग्रह की एक अन्य लघुकथा 'चोट' (पृष्ठ 74) में वेतन वृद्धि हेतु मजदूर आन्दोलन और मजदूर लीडर द्वारा रूपए खा कर चुप हो जाने (//गुम चोट आई है, ठीक से बोल भी नहीं पा रहे हैं।//) पर करारी चोट की है। इस तरह ज़रूरतमंदों की भावनाओं के साथ खेल केवल मजदूर यूनियन द्वारा किसी फैक्ट्री में ही नहीं होता वरन यह जगह-जगह पर किसी न किसी रूप में मौजूद है।

योगराज प्रभाकर की लघुकथा 'खेल-खिलाड़ी' [10] में हथियारों को बेच कर धन कमाने की वैश्विक महाशक्तियों की प्रवृत्तियों पर कटाक्ष किया गया है। अपने स्वार्थ के कारण उन्हें देशों को आपस में लड़ाने से भी गुरेज नहीं। योगराज प्रभाकर की लघुकथाओं की विशेषता है कि उनमें कोई न कोई पंक्ति पञ्च पंक्ति की तरह ज़रूर होती है। इस लघुकथा का यह वाक्य भी पूरी लघुकथा का सार कह देता है कि, "दुनिया व्यवहार से नहीं व्यापार से चलती है।"

इसी प्रकार अवधेश कुमार की लघुकथा 'नोट' [34] की यह दो पंक्तियाँ सामयिक समाज को दर्शाने में सक्षम हैं:

//यह कवि कल्पना नहीं, इस दुनिया का सच है।//

//सोचना क्या? इसे पहन डालो। यह तुम्हारे पूरे अस्तित्व को ढँक सकता है।//

इसी संकलन (मैदान से वितान की ओर) में राधेश्याम भारतीय की एक लघुकथा 'मुआवज़ा' (पृष्ठ सं. 94-95) है, इसमें किसानों की फसल नष्ट होने पर उन्हें मुआवज़ा दिया जाता है, लेकिन फसल काटने वाले मजदूरों को नहीं, जबकि देखा जाए तो नुकसान दोनों का ही हुआ है। आर्थिक असामनता के कारणों में से एक को गिनाती यह लघुकथा विचारणीय है।

अशोक जैन की लघुकथा 'खाली पेट' [30] में आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण एक महिला का एक युवक के साथ घिसटती सी चले जाने को बताया है। इस लघुकथा की इस एक पंक्ति में गहरा तंज है कि, //चल आ, तेरा पेट भर दूं।//

माधव नागदा की लघुकथा 'मेरी बारी' [31] का प्रारम्भ एक वक्ता द्वारा देश की अर्थव्यवस्था की बड़ाई करते हुए और अंत एक बच्चे द्वारा धनाभाव के कारण स्कूल यूनिफॉर्म न पहन पाने पर होता है। यह लघुकथा अपने भाषा शिल्प के कारण तो विशिष्ट है ही, साथ ही यह प्रश्न भी उठा रही है कि देश के विदेशी मुद्रा के भण्डार भरने के साथ-साथ क्या देशवासियों के रहन-सहन को एक सीमा तक उचित रखना आवश्यक है अथवा नहीं?

संतोष सुपेकर के लघुकथा संग्रह 'भ्रम के बाज़ार में' की रचना 'उल्टी गिनती' [12] बिम्बात्मक रूप से मुद्रास्फीति और अर्थव्यवस्था के गिरावट को दर्शाती एक सफल रचना है। चवन्नी (पच्चीस पैसे) के सिक्के को बंद होते देख एक रुपये के सिक्के द्वारा हँसी उड़ाए जाने पर चवन्नी जो कुछ कहती है वह अर्थव्यवस्था की पोल खोलने में सक्षम है। चवन्नी कहती है कि, "महंगाई और मुद्रास्फीति तेरे जीवन की भी उल्टी गिनती कर रही है।" इसी संग्रह की लघुकथा जो कि एक पुराने गीत की पंक्तियाँ 'दुनिया में रहना है तो' [12] के शीर्षक के साथ है, में उस पुराने गीत के आगे की पंक्ति के विपरीत 'काम करो प्यारे' की जगह 'दान करो प्यारे' को दर्शा रही है। इसी में मौजूद 'नया नहीं' [12] लघुकथा यूं तो मूल रूप से मिठाई में मिलावट पर आधारित है लेकिन इसका शिल्प वित्त-व्यवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें जगह-जगह पर मिठाइयों के मूल्य को दर्शाया गया है और कम कीमत की चीज़ों को खरीदने की प्रवृत्ति को भी।

जलगाँव, महाराष्ट्र के लघुकथाकार व समीक्षक अनिल मकरिया की लघुकथा 'कच्छप निधि' अपने शीर्षक में 'निधि' शब्द से ही इस शोध कार्य को आकर्षित करती है। हालांकि यह रचना मूल रूप से रिश्तों को सम्भालने के लिए कह रही है, जो कि सामयिक विशेष विसंगति है। इस रचना की निम्न दो पंक्तियों पर बात करते हैं:

//"और पापा आपने क्या किया ?... रिश्तों को छोड़कर चंद सिक्के सँभालने में लग गए।"//

तथा

//आप मुझसे भी यही चाहते हैं कि मैं भी आपकी तरह इस सिक्के की सुरक्षा करते हुए खुद को इन रुपयों का चौकीदार बना दूँ ?//

इन्हें पढ़कर इस रचना का मंतव्य समझ में आ जाता है। लेकिन इस रचना के शिल्प में 'सिक्के' को लेना और पिता का धन-लोलुप होना इस रचना को सीमित रूप से धन की तरफ मोड़ रहा है।

कनक हरलालका की लघुकथा 'उपहार' का अंत इसे बेहतरीन रचना बना रहा है, जब पाठक यह पढ़ते हैं कि //उपहार पाने के लिए पाँच हज़ार की खरीदारी करनी जरूरी होती है, सान्ताक्लॉज बनना नहीं।// तो खुद-ब-खुद अर्थ सम्बन्धी सामयिक मुद्दा 'महंगाई' पर रोष उत्पन्न होता है।

राम मूरत 'राही' की लघुकथा 'गिरगिट' रिश्तों से प्रारम्भ होती है लेकिन खत्म होते-होते अपनी विषय प्रकृति बदल कर अर्थ प्रधान हो जाती है कि माँ की सेवा इसलिए हो रही है कि उनकी पेंशन आ रही है। यह अर्थ प्रधान लघुकथाओं के दृष्टिकोण से एक विशिष्ट प्रयोग कहा जा सकता है। इस लघुकथा का शीर्षक भी इसे सार्थक करता है।

रमेश कुमार संतोष की लगभग चालीस वर्ष पूर्व लिखी गई लघुकथा 'कटौती' महंगाई के कारण खर्चों में कटौती पर आधारित है। इसमें अखबार, प्राइवेट स्कूल, दूध, फिल्म, काम करने वाली, परांठे की बजाय चपाती, एक बार सब्जी जैसी कटौतियों का जिक्र है। यह लघुकथा आज भी प्रासंगिक है। संतोष की एक अन्य लघुकथा 'व्यवसाय' में प्राइवेट विद्यालयों के व्यवसायीकरण को दर्शाया गया है।

ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' की लघुकथा 'भ्रष्टाचार की सजा' एक सामान्य मुद्दे 'रिश्वत' पर आधारित है, अतः यह वाणिज्यिक प्रकृति की तो नहीं है, लेकिन इस रचना में 'रजिस्ट्री' करवाने की बात को कहकर सामजिक प्रकृति की सीमा लांघी गई है और व्यवसायिक प्रकृति की तरफ मोड़ा गया है। इस रचना में रिश्वत का समाचार प्रकाशित हो जाने से रजिस्ट्रार के ट्रांसफर को दर्शाया गया है।

अनिता रश्मि की लघुकथा 'दया' में रुपये के लिए देह-व्यापार, 'मुआवजा' में बलात्कार के बदले मुआवज़ा, 'रैलियाँ' में रुपये लेकर नारे लगाने को बताया गया है। ये लघुकथाएं किसी न किसी सामजिक विसंगति को उजागर कर रही हैं, लेकिन धन को आधार रख कर कही गई नहीं हैं। इस तरह की कई रचनाओं का सर्जन हो रहा है, जिन्हें धन पर पूर्ण आधारित रचनाएं नहीं कहा जा सकता। हालांकि इसका अर्थ यह नहीं कि ऐसी लघुकथाएं किसी से कमतर हैं बल्कि अपने विषय को उठाने में तो सक्षम हैं ही।

भुवनेश्वर चौरसिया "भुनेश" की लघुकथा "बचत" दो मायनों में विशिष्ट कही जा सकती है। एक बचत की प्रवृत्ति विकसित करने के और दूसरे बचत सहित धन के सदुपयोग में। हालांकि यह वाणिज्यिक लघुकथा नहीं है, लेकिन सामजिक प्रवृत्ति की होते हुए भी घरेलू वाणिज्य अर्थात बचत के बारे में एक सीमा तक कह रही है। [13]

सुरेश बरनवाल की लघुकथा 'कीमत' किसानों से कम दाम में खरीद कर महंगे दामों में बेच देने पर आधारित है। यह सामयिक विसंगति है, जिसका काफी समय से देश में विरोध भी हो रहा है। [15]

कुछ वर्षों पहले एक पुस्तक में पढ़ा था कि भारत-नेपाल बॉर्डर पर एक जनजाति है 'थारू के नाम से, वे पहले खुद को क्षत्रिय मानते थे, लेकिन बाद में जैसे ही जनजाति के आरक्षण एवं अन्य लाभ समझ में आए, वे जनजाति में चले गए। देवी नागरानी की सिन्धी से हिन्दी में अनुवादित लघुकथा 'ग़रीबी की रेखा' भी ऐसा ही कुछ बता रही है। अपने अंत में यह रचना एक सत्य को भी उजागर कर रही है, जब पात्र कहता है कि //साब, घर फ्री, बच्चों की फीस फ्री, दवा फ्री, और हर माह 500 रुपये भी मुफ़्त में बैठे बिठाये मिल जाते है। इसलिए मैं हमेशा इस रेखा के नीचे रहना पसंद करता हूँ।// [16]

अशोक वर्मा की लघुकथा 'खाते बोलते हैं' में एक व्यक्ति की समय के साथ बदलती आर्थिक स्थिति का वर्णन काफी रोचक अंदाज़ में किया गया है। इसके शिल्प में एक व्यक्ति के खाते (लेजर अकाउंट) को लेकर उसकी गिरती आर्थिक स्थिति दर्शाई गई है। [17]

भगीरथ की लघुकथा 'शर्त' [20] की यह पंक्ति पढ़िए, //आई हुई लक्ष्मी को ठुकरा रहा है। ऐसा बेवकूफ कहाँ मिलेगा।// यह लघुकथा पूर्णतः धन आधारित नहीं है बल्कि धन की बजाय सिद्धांतों को उभार रही है लेकिन यह अकेली पंक्ति सामान्य होते हुए भी समाज की विशिष्ट मानसिकता दर्शा रही है।

भगीरथ की ही एक अन्य लघुकथा 'क्रेडिट कार्ड' [21] फाइनेंस कम्पनी द्वारा क्रेडिट कार्ड के लुभावने वादों और विज्ञापनों के जरिए धन खर्च करने की प्रवृत्ति बढ़ा कर कर्ज लेने की मानसिकता बनाने पर कही गई है। कुमार सम्भव जोशी की लघुकथा 'नाप' [38] भी क्रेडिट कार्ड के लुभावने वादों को गाय के हरी घास खाने के चक्कर में कुत्तों से कटवा लेने के उदाहरण से बताया गया है।

इसी संकलन (कथा-समय: दस्तावेजी लघुकथाएं) में अशोक भाटिया की एक लघुकथा 'लोक और तंत्र' (पृष्ठ सं. 96) है, इसका प्रथम अनुच्छेद पढ़िए, //तंत्र जाग उठा। लोक के पास आकर पूछा-"क्या चाहिए?" लोक बोला-"रोजगार। नौकरी।"// चुनावी समय में सिस्टम द्वारा आम व्यक्ति की तकलीफ कान लगा कर सुनना तो आम बात है, ख़ास बात यह है कि इन तीन पंक्तियों में देश-काल की अर्थव्यवस्था और उसकी स्थिति के कारण का वर्णन कर देना, जो कि लेखक ने बखूबी किया है। यही एक लघुकथा की खूबसूरती है और साहित्यिक दायित्व भी।

अनवर शमीम की लघुकथा 'और हाथी रो रहा था' [22] बाज़ारबंदी के कारण दिहाड़ी मजदूरों की दुर्दशा पर आधारित है। पुस्तक के सम्पादक और संकलनकर्ता का इस रचना का चयन निःसंदेह बेहतरीन है। अपने राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ती के लिए बाज़ार को किस तरह मोहरा बनाया जाता है और बंद होने का सामान्य व्यक्ति की आर्थिक स्थिति पर कितना असर पड़ सकता है, यह रचना इसे दर्शा रही है। इसी संग्रह में पवन जैन की लघुकथा 'एक कटोरी सब्जी' (पृष्ठ सं. 80) किसानों द्वारा सीधे ही ग्राहकों को सब्जी बेचे जाने पर उधारी, मोलभाव, बेचने के लिए जगह के किराए में उलझते हुए दिखा कर सीधा प्रश्न खड़ा किया है कि जब बड़े उद्योगों में प्रोडक्शन का विभाग अलग और सेल्स-मार्केटिंग का अलग होता है तो किसानों की स्थिति को बेहतर करने के लिए इस तरह का एक तंत्र विकसित क्यों नहीं किया जा सकता?

तंत्र की बात को ही आगे बढ़ाते हुए, मुरलीधर वैष्णव की लघुकथा 'पेंशनर' [23] में एक व्यक्ति की पेंशन उसके जीवित होने के प्रमाणपत्र के अभाव में रुकी हुई थी। वह एक खिलौना बन्दूक दिखा कर आत्महत्या की धमकी देकर उसी बात को सबूत के तौर रखने को कहकर बैंक मैनेजर को डरा देता है। इस लघुकथा की यह पंक्ति //ईमानदारी और तंगी का चोली-दामन का साथ है// तंत्र की कमियों को उजागर रही है।

मोहन राजेश कुमावत की दैनिक निरंतर, ब्यावर, राजस्थान में प्रकाशित लघुकथा 'निगाहें', एक व्यक्ति की समय के साथ बढती आर्थिक स्थिति और उसी की साथ-साथ देह-व्यापार में लिप्त एक महिला की देह के घटते मूल्य पर आधारित है। यह लघुकथा समय-परिवर्तन के अलावा एक सन्देश यह भी दे जाती है कि समयानुसार व्यक्ति को अपनी कमाई के साधनों में बदलाव करना ही चाहिए, अन्यथा कभी भी बाज़ार से बाहर निकाला जा सकता है।

चंद्रेश कुमार छतलानी की लघुकथा 'खजाना' पिता द्वारा अपने अंतिम संस्कार हेतु भी रुपये रख जाने पर आधारित है। [25]

मीरा जैन की लघुकथा 'आश्चर्य; किन्तु सत्य' [32] कुछ ही पंक्तियों में एक बहुत बड़ी बात कह रही है कि एक विभाग का बजट घाटे से फायदे का हो गया क्योंकि उस वित्त वर्ष में वह विभाग मंत्री विहीन था।

राजकुमार निजात की लघुकथाएं 'नफ़ा-नुकासान' व 'असली-नकली' में क्रमशः रिक्शा चलाने वाले और रिक्शे में बैठने वाले यात्री की धन सम्बन्धी मानासिकाता का वर्णन तथा खर्च न कर पाने की स्थिति में धन का कोई महत्व न होना, बताया गया है। दोनों लघुकथाएं विषय की दृष्टि से सामयिक हैं। पहली लघुकथा जहां आज का समय दर्शा रही हैं तो दूसरी सन्देश देने में सक्षम है। [33]

सुरेश सौरभ की लघुकथा 'खजांची आए' [35] में नोटबंदी के समय नोट बदलवाने के लिए बैंक की लाइन में ही में प्रसव होने की बात कही गई है। इसी संग्रह में 'नोटबंदी' शीर्षक से लघुकथा है जो नोटबंदी के समय बहन की शादी के लिए धन न मिल पाने के कारण एक भाई के आक्रोश को दर्शा रही है।

अरुण कुमार की लघुकथा 'बाज़ार' [36] में बाज़ार की प्रतिस्पर्धा को दर्शाया गया है। प्रतिस्पर्धा के युग में खुद को अच्छे से अच्छा और सस्ते से सस्ता दिखाने के लिए हर तरह के हथकंडे अपनाए जाते ही हैं।

कमलेश भारतीय की लघुकथा 'मनीप्लांट, मैं और आप' [37] में जब रचना के मुख्य पात्र को यह पता चलता है कि मनीप्लांट अँधेरे में ही फैलता है तो उसके दिमाग में यह बात आती है कि //किसकी छाया में बैठकर काले धंधे करूँ जिससे मेरे ड्राइंगरूम में नयी चीज़ें आती जाएं।// तरक्की का आसान लेकिन गलत रास्ता मनीप्लांट के जरिये दर्शाया गया है।

कुमार सम्भव जोशी सामयिक विषयों पर पकड रखते हैं उन'की लघुकथा 'बाजार' [38] एक व्यक्ति अपने बेटे को रेप केस से बचाने में काफी रूपया खर्च होने का रोना रोता है और रचना के अंत में अपने बेटे की शादी की रेट कम होने का भी। यह रचना सामयिक विषयों के साथ जुडी हुई धन की प्रवृत्ति को बताने में सक्षम है, केवल अंत में दहेज़ वाली एक पंक्ति इस रचना को सामजिक बुराई से जोड़ रही है। चूँकि लघुकथा का अंत महत्वपूर्ण होता है, अतः इस रचना को सामजिक विसंगति और आर्थिक मानसिकता का मिलाजुला रूप दर्शाती हुई कह सकते हैं।

इस प्रकार की अन्य कई लघुकथाएं भी विभिन्न साधनों द्वारा प्राप्त हुईं, परन्तु उनमें से अधिकतर लघुकथाओं की मूल वस्तु 'धन' के अतिरिक्त अन्य कुछ था। इनके विपरीत इस शोध की प्रकृति की होते हुए भी कुछ लघुकथाओं का जिक्र विभिन्न कारणों, यथा समयाभाव, स्थानाभाव आदि के कारण नहीं कर पाया, क्योंकि लघुकथाओं की बजाय वित्त सम्बन्धी विभिन्न श्रेणियों को दर्शाने इस शोध में दर्शाने में प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष

लगभग एक वर्ष के अध्ययन के पश्चात इस कार्य हेतु कुछ लघुकथाएं इकट्ठी कर पाया। अतः यह कहा जा सकता है कि लघुकथाकार जिन विषयों पर कार्य कर रहे हैं, उनमें कहीं न कहीं वित्त सम्बन्धी विषय छूटते जा रहे हैं। यह भी अवलोकन किया गया कि वित्त सम्बन्धी लघुकथाएं, जो प्राप्त हुईं, उनमें से अधिकतर वरिष्ठ व पुरुष रचनाकारों द्वारा सर्जित है। कुछ को छोड़कर काफी समकालीन लघुकथाकारों को इन पर कार्य करना बचा हुआ है। जबकि कार्य प्रारम्भ करने से पहले मुझे समकालीन लघुकथाकारों से अधिक उम्मीद थी।

मजदूरी-हलवाही, धनवादी मानसिकता, धन-लोलुपता, बिलों में हेर-फेर, बैंक का कर्ज़, मज़दूरी, वेतन, हथियारों के सौदे, मुआवज़ा, कमज़ोर आर्थिक स्थिति से उत्पन्न हुई विसंगतियां, अर्थव्यवस्था के गिरावट, वित्त-व्यवस्थाएं, नोटबंदी, महंगाई, बचत, बलात्कार जैसी गलती करने पर बचाने के लिए खर्च, गरीबी की रेखा के लाभ, रोजगार,पेंशन, क्रेडिट कार्ड सरीखे विषयों पर लघुकथाएं प्राप्त हो पाईं।

हालांकि वित्त सम्बन्धी कई विषय ऐसे हैं, जिन पर लघुकथा लेखन या तो कम है अथवा नहीं है। उदाहरणस्वरुप, स्टॉक मार्केट, कमोडिटी, अर्थव्यवस्था सुधार, कौशल आधारित उद्योग, जनसंख्या को मैनपॉवर में बदलना आदि-आदि। कुछ विषयों को अपने आस-पास से ही लिया जा सकता है, जैसे सब्ज़ीवाले के तौलने का तरीका, सोने-चांदी के मूल्यों में उतार-चढ़ाव, घरेलू बजट, आदि।

उपरोक्त के अतिरिक्त एक अन्य बात जिसका ध्यान लघुकथाकारों को देना चाहिए, वह है – धन की अच्छाई को भी दर्शाने की तथा उचित तरीके से देश और मानवता के लिए धन अर्जित करने की। अधिकतर प्राप्त लघुकथाओं में धन लोलुपता और धन की कमी ही दर्शाई गई है। हालांकि यह भी एक सत्य है, जिसे दर्शाना भी लघुकथाकारों का दायित्व है, लेकिन साथ ही उचित मानसिकता को

बताना भी ताकि अमीरी और गरीबी के बीच में दूरी कम हो सके तथा अमीर और अमीर व गरीब और गरीब हो रहे हैं, इसे भी कम किया जा सके।

सन्दर्भ

[1] वाल्मीकि रामायण, https://www.motivationalstoriesinhindi.in/2017/09/ramayan-pdf.html [Accessed on 06 November 2022]

[2] रामचरित मानस, https://www.ramcharit.in/ram-charit-manas- श्री-रामचरित-मानस/ [Accessed on 06 November 2022]

[3] The Poems of Jonathan Swift, D.D., Volume I (of 2), By Jonathan Swift

[4] The Honour of Israel Gow From The Amazing Adventures of Father Brown, by Gilbert Keith Chesterton, 1910. Available at https://www.sfu.ca/~swartz/israel_gow.htm [Last access on 06 November 2022]

[5] https://www.gutenberg.org/files/2197/2197-h/2197-h.htm

[6] How much land does a man need? By Leo Tolstoy. Details available at https://www.uvic.ca/ research/centres/cisur/assets/docs/iminds/gam-how-much-land-a-man-needs.pdf [Last accessed on 6 November 2022]

[7] The Dramatic Works of William Shakespeare By William Shakespeare Published by James Conner, 1834 (Available on Google Books) (Accessed on November 8, 2022)

[8] https://www.amarujala.com/kavya/irshaad/hariom-panwar-best-poem-kala-dhan?page=6 (Accessed on November 8, 2022)

[9] gadyaakosh – ath vikas katha, sukesh saahni

[10] फक्कड़ उवाच (लघुकथा संग्रह), योगराज प्रभाकर, पृष्ठ संख्या 58-59

[11] http://laghukathaduniya.blogspot.com/2020/04/6.html (Accessed on November 12, 2022)

[12] भ्रम के बाज़ार में (लघुकथा संग्रह), संतोष सुपेकर

[13] https://www.rachanakar.org/2018/07/blog-post_1.html (Accessed on November 10, 2022)

[14] मधुदीप: लघुकथा सृजन के विविध आयाम, सं.: डॉ. उमेश महादोषी, पृष्ठ स.708-709, दिशा प्रकाशन

[15] https://desharyana.in/archives/3429 (Accessed on November 10, 2022)

[16] और गंगा बहती रही, सिंधी लघुकथाओं का हिंदी अनुवाद, देवी नागरानी

[17] पड़ाव और पड़ताल -1, सं. मधुदीप, दिशा प्रकाशन, पृष्ठ स.– 29

[18] असभ्य नगर एवं अन्य लघुकथाएँ (लघुकथा-संग्रह), रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', अयन प्रकाशन, पृष्ठ स. 26

[19] पड़ाव और पड़ताल -2, सं. बलराम अग्रवाल, दिशा प्रकाशन, पृष्ठ स.– 27-28

[20] पड़ाव और पड़ताल -2, सं. बलराम अग्रवाल, दिशा प्रकाशन, पृष्ठ स.– 85

[21] कथा-समय: दस्तावेजी लघुकथाएं, सं. अशोक भाटिया, अनुज्ञा बुक्स, पृष्ठ स.– 35

[22] मास्टर स्ट्रोक: लघुकथा संग्रह, सं. सुकेश साहनी, अयन प्रकाशन, पृष्ठ स.– 17

[23] https://disambiguated64.rssing.com/chan-53702545/all_p3.html (Accessed on November 12, 2022)

[24] https://rsaudr.org/show_artical.php?&id=309 (Accessed on November 11, 2022)

[25] http://laghukathaduniya.blogspot.com/2019/07/blog-post_8.html (Accessed on November 12, 2022)

[26] अटवाल, विकास."मर्यादा सीखे रामायण से"

[27] अवस्थी, एस (1972)" प्राचीन भारत में शिक्षा वाल्मीकि रामायण के विशेष संदर्भ में"

[28] ए. एल. बाघम,"अदभुत भारत"

[29] डी .डी.कौशांबी,"प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता"

[30] पड़ाव और पड़ताल -14, सं. मधुदीप, दिशा प्रकाशन, पृष्ठ स.– 57

[31] हिन्दी की कालजयी लघुकथाएं, स. मधुदीप, दिशा प्रकाशन, पृष्ठ सं. 129

[32] 101 लघुकथाएं (लघुकथा संग्रह), मीरा जैन, पत्रिका प्रकाशन, पृष्ठ सं. 104

[33] आसपास की लघुकथाएं (लघुकथा संग्रह), राजकुमार निजात, अनु प्रकाशन, पृष्ठ सं. 202-203

[34] मैदान से वितान की ओर (लघुकथा संकलन), संकलक: भगीरथ परिहार, राही प्रकाशन, पृष्ठ सं. 22-23

[35] नोटबंदी (लघुकथा संग्रह), सुरेश सौरभ, नमन प्रकाशन

[36] निर्वाचित लघुकथाएं (लघुकथा संकलन), अशोक भाटिया, साहित्य उपक्रम, पृष्ठ सं. 198-199

[37] https://www.cityairnews.com/content/laghukatha-moneyplant-main-aur-aap-hindi-short-story-by-kamlesh-bhartiya

[38] ये आप ही के किस्से हैं (लघुकथा संग्रह), कुमार सम्भव जोशी, दिशा प्रकाशन, पृष्ठ सं. 47-49

• • •